187 P
683
M

* वन्देमातरम् *

राष्ट्रीय शंखनाद ।

683

महात्मा गांधी

संग्रहकर्ता व प्रकाशक

यति यतनलाल ।

प्रथमवार]

[मूल्य -)

891.431
Y27R

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 683
Date 17.12.71
GOVT. OF INDIA

॥ वन्देमातरम् ॥

यह मदान्ध शासन उलटा दो सत्य शांति मय वारोंसे।
अन्यायी अरिको दहला दो अपने प्रबल प्रहारोंसे॥
स्वतंत्रता की विजय पताका ऊंची फहराते जाना।
रण भेरी बज चुकी वीरवर पहनो केसरिया बाना॥

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

राष्ट्रीय शंखनाद

संग्रहकर्ता व प्रकाशक—
रतनलाल यति

संचालक—
राजनैतिक साहित्य प्रचारक मंडल
जिला कांग्रेस कमेटी,
रायपुर, सी. पी.।

प्रथम वार] [मूल्य ॥)

मुद्रक—बाबू सूरजभान गुप्त केसरी प्रेस, बेलनगंज आगरा।

॥ वन्देमातरम् ॥

* राष्ट्रीय शंखनाद *

पदवी वालों ने।

दुश्मन का डंका भारत में, बजवा दिया पदवी वालों ने।
लायक स्वराज के मुल्क नहीं, समझा दिया पदवी वालों ने॥
खुद बन गुलाम परदेशी के, घर फूंक तमाशा देखें ये।
औरों को स्वाद गुलामी का, चखवा दिया पदवी वालों ने॥
तनख्वाह नहीं फूटी कौड़ी, भरता है पेट चुगलियों में।
बे-पैसे के नौकर बनना, सिखला दिया पदवी वालों ने॥
बे-मांगी रायें दे देकर, ये राय बहादुर बन बैठे।
गांधी को पागल-दीवाना, बतला दिया पदवी वालों ने॥
झंडा राष्ट्रीय जहां पर भी, देखा फहराता मर्दाना।
झट चल अपने चाचा घर, उकसा दिया पदवी वालों ने॥
कइयों को जेल दिला कर के, बिछुड़ा कर रिश्तेदारों से।
खादी धारण में बदचलनी, लिखवा दी पदवी वालों ने॥
अंग्रेजों की नौकरशाही, काफी थी तुम्हें कुचलने में।
शह देने को अपनी पल्टन, बनवा ली पदवी वालों ने॥
सरकार प्रजाद्रोही जो है, ये राजभक्त कहलाते है।
हा! प्रजा द्रोह में राजभक्ति, दिखला दी पदवी वालों ने॥
फुसलावें जनता को, मिल कर डायर के भाईबन्दों से।
दो नावों पर टांगें रखना, सिखला दिया पदवी वालों ने॥
ये हैं दलाल अँगरेज़ों के, कल पुर्जे नौकरशाही के।
घर फोड़ूपन का पंथ नया, चलवा दिया पदवी वालों ने॥
देशी खाना देशी कपड़े, देशी बातें जलसे देशी।
इनसे नफरत करना सीखा, इन पापी पदवी वालों ने॥

———

क्रान्ति की जय ।

ऐ हिन्द के सपूतो, क्रान्ति की जय मनाओ ।
बदला है अब ज़माना, क्रान्ति की जय मनाओ ॥
अब आग लग गई है, हिन्दोस्तान भर में ।
तुम भी सहायता कर, क्रान्ति की जय मनाओ ॥
त्यागो बिदेशी कपड़े, होली में भस्म कर दो ।
खादी को अब पहन कर, क्रांति की जय मनाओ ॥
सरकार का बनाया, कानून वृक्ष को अब ।
जड़ से उखाड़ करके, क्रान्ति की जय मनाओ ॥
गांधी ने आज देखो, सब जग हिला दिया है ।
बूढ़े का साथ देकर, क्रांति की जय मनाओ ॥
अब तो नहीं रहा है, लेक्चर का वह ज़माना ।
रण में वो कूद करके, क्रांति की जय मनाओ ॥
क़ानून भंग करने में, जेल दंड होवे ।
हंसते हुए सहन कर, क्रांति की जय मनाओ ॥
लाया अमोल मौका, गांधी की हड्डियों ने ।
देकर के मांस अपना, क्रांति की जय मनाओ ॥
ऐसी सुवर्ण संधी, आवे न हाथ अपने ।
खुद को अमर बना कर क्रांति की जय मनाओ ॥

ग़ज़ल ।

ऐ हिन्द के जवानो, कुछ करके अब दिखादो ।
संसार को अहिंसा की, सीख तो सिखा दो ॥
मरने का भय दिखा कर, तुमको डरा रहे हैं ।
अपनी छमा से उनके, हथियार को गिरादो ॥
मरता है आन पर जो, मरता वही अमर है ।
सिद्धान्त यह अटम है, मर कर उन्हें बतादो ॥

गोरा की गूढ़ गाथा बादल की वीरता भी ।
रण में गरज गरज कर, उनको ज़रा सुना दो ॥
अभिमन्यु के से मोती, मरने से क्या डरेंगे ।
कानून के चक्राबू का, भय तो अब भगादो ॥
खारी नमक बनाने, गांधी जी जा रहे हैं ।
ऐसा जो हैं समझते, उनको तुम ये जता दो ॥
मीठा बना के भारत, की वह मिठाई देंगे ।
भ्रम में पड़े हो साहब दिल से उसे हटा दो ॥
ऐ हिन्द की युवतियो, मैदान में तुम आवो ।
दुर्गा की बेटियां हो, अब ज़रा यह दिखा दो ।
हो कालिका कुमारी, तुम किससे डर रही हो ।
बस जांघिया चढ़ाओ, साड़ी को अब हटा दो ॥
किसकी मजाल तुमको, तिरछी नज़र से देखे ।
दे हांक भाइयों के, साहस को यों बढ़ा दो ॥
हुंकार से तुम्हारी, कायर भी वीर होंगे ।
यह गुप्त शक्ति अपनी, संसारको दिखा दो ॥
है भक्त कालिका का, भारत बहुत दिनों से ।
करतूत कालिका की, प्रत्यक्ष तो करा दो ॥
बहिनें बढ़ें जो आगे, भाई न फिर हटेंगें ।
हिल मिल के नाव भारत, की पार तो लगा दो ॥
ऐ हिन्द के जवानों, ऐ हिन्द की युवतियों ।
अभिमानियों की गर्दन, निज बलसे अब बहा दो ॥

कविता कलाप ।

लगादे आग लगादे आग ।
तरुण दल बल से फिर तू जाग ॥

आज गा उथल पुथल के गान ।
एक स्वर कोटि कोटि सन्तान ॥
करो अन्यायी चरण विदीर्ण ।
वीर होकर वरित विकीर्ण ॥
भीरुता तू कायरता त्याग ।
भीम बिक्रम बल भर जाग ॥
लगादे आग लगादे आग ।
तोड़ कर बंधन के दृढ़ ताग ॥
लगादे रे प्राणों की होड़ ।
शत्रुत्रा के हाड़ों को तोड़ ॥
कड़क कर वज्र सदृश तू टूट ।
क्रूरता के शिवरों को तू लूट ॥
खेल फिर स्वन्त्रता से फाग ।
डरे जग एक बार फिर जाग ॥

रणभेरी ।

बढ़ो २ हे भारत वीरो, ऋषियों की प्यारी संतान ।
स्वतंत्रता के महा समर में, हो जावो सहर्स बलिदान ॥
धर्मयुद्ध में मरना भी है, अमर स्वर्ग पद को पाना ।
रणभेरी बज चुकी बीरवर, पहिनों केसरिया बाना ॥
माता के सच्चे पूतों की, आज कसौटी होना है ।
देखें कौन निकलता पीतल, कौन निकलता सोना है ॥
उतरेगा जो आज युद्ध में, वही शूर है मरदाना ।
रणभेरी बज चुकी बीरवर, पहिनों केसरिया बाना ॥
यह मदान्ध शासन उलटा दो, सत्य शांति मय वारों से ।
अन्यायी अरि को दहला दो, अपने प्रबल प्रहारों से ॥
स्वतंत्रता की विजय पताका, ऊंची फहराते जाना ।

रणभेरी बज चुकी बीरवर, पहिनों केसरिया बाना ॥
बिना आत्म बलिदानों के, कब किसने स्वतंत्रता पाई ।
लाखों भेंट हुए माता के, चरणों में तब वह आई ॥
आज हमें भी दुनियाँ को, अपना पौरुष है दिखलाना ।
रणभेरी बज चुकी बीरवर, पहनों केसरिया बाना ॥
साठ वर्ष के बूढ़े गाँधी, देव जेल में बैठे आज ।
कैसे तुम्हें युवक कहलाते, उरमें तनिक न आती लाज़ ॥
इस विडम्बना मय जीवन से, तो अच्छा है मर जाना ।
रणभेरी बज चुकी बीरवर, पहनों केसरिया बाना ॥
आज हमारा नायक, छलसे नौकर शाही ने छीना ।
समझ रही है मातृ भूमिको, अब तो वह अबला दीना ॥
होकर ही आज़ाद रहेंगे, करलो अब ऐसा कीना ।
आवो वीर अड़ा दो बढ़कर, तोपों के आगे सीना ॥
मिला सुअवसर आज हमें, निज रण कौशल है दिखलाना ।
रणभेरी बज चुकी बीरवर, पहनों केसरिया बाना ॥
मृत्यु मिले या अक्षय जीवन, इसकी कुछ परवाह न हो ।
राज सदन या कारागृह हो, दोनों की कुछ चाह न हो ॥
साहस से लो काम बंधुवर, कष्टों की कुछ आह न हो ।
लगी रहे बस दृष्टि ध्येय पर, क्षण भंगुरता उत्साह न हो ॥
एक मात्र है लक्ष्य हमारा, निज स्वतंत्रता का पाना ।
रणभेरी बज चुकी बीरवर, पहनों केसरिया बाना ॥
जिसके प्राण हथेली परहों, उसको फिर किसका भय है ।
निश्चय होगी विजय हमारी, यदि हममें दृढ़ निश्चय है ॥
सत्याग्रह का सफल अस्त्र है, करमें फिर क्या संशय है ।
बढ़े चलो उत्साह सहित, बस रक्खी हाथों में जय है ॥
मरजाना या मातृ भूमिके, सच्चे सेवक कहलाना ।
रणभेरी बज चुकी बीरवर, पहनों केसरिया बाना ॥

कविता ।

इंडिया को करने बदनाम ।
चल पड़े दुश्मन नमक हराम ॥
कान खोल सुनलो ज़रा, इधर हमारी बात ।
कैसे तुम पर हो रहे, सरकारी आघात ॥
फूट का चक्र साम औ दाम ।
चल पड़े नौकर नमक हराम ॥
जरमन जंगी फौज से, बृटिश लाज के काज ।
अरजी सुन भरती करी, श्रीगांधी महाराज ॥
सुना नहिं लोकमान्य अहकाम ।
बन गये नौकर नमक हराम ॥
राज भक्त बन चल पड़े, बसरा औ बग़दाद ।
छाती छलनी होगई, हुए न पर आज़ाद ॥
लगा जलियां वाला इल्जाम ।
बन गये दुश्मन नमक हराम ॥
जिसने लंदन के लिये, किया न वतनी ख्याल ।
उसी शांति के मूर्ति को, कैद हुई ६ साल ॥
जिन्हें जाने सब खासो आम ।
बन गये नौकर नमक हराम ॥
असहयोग को कर सकी, बृटिश शक्ति संहार ।
मैं हिंदू मुसलिम कलह, अब तक सकी न टार ॥
हार सरकार गई बलधाम ।

बन गये नौकर नमक हराम ॥

इधर कमीशन फार्स भी, नया किया ईजाद।
कल रायल अब साइमन, एक २ के बाद ॥

चले ले ले ढोंगी पैग़ाम।
बन गये नौकर नमक हराम ॥

अमेरिका यूरोप में, भारत के प्रतिकूल।
झोंकें मिस मेयो उधर, सच्चाई पर धूल ॥

होगया मेयो का इलहाम।
बन गये दुश्मन नमक हराम ॥

दारुण दारिद रोग मय, करि कर्म वश लाश।
ऐसे गन्दे हिन्द का, करिये शीघ्र विनाश ॥

वर्ल्ड में जो चाहो आराम।
करो भारत का काम तमाम ॥

दो ढाई वर्ष में, किया खूब प्रबन्ध।
ये नालायक हिन्द तो रहा अन्ध का अंध ॥

नाश तो कायर और गुलाम।
बन गये नौकर नमक हराम ॥

मदर इंडिया में करे, मेयो यों प्रचार।
ऐ भारत के वासियो, सुनलो कान उघार ॥

सोचिये ज़रा हृदय को थाम।
बन गये नौकर नमक हराम ॥

गांधी के संग्राम में, जूझ पड़ो मैदान ।
दिखलादो संसार को, नालायक़ की शान ॥
कहे कवि शर्मा राजाराम ।
बन गये नौकर नमक हराम ॥

झंडा ।

पहन कर केसरिया बाना ।
उठालो झंडा मरदाना ॥
सिंह वाहिनी जग जननि अभिमत फल दातार ।
श्री जगदम्बा करेगी, भारत का उद्धार ॥
भद्र काली का गुण गाना ॥
जबसे तुमने तज दिया, भले बुरे का ज्ञान ॥
होता है हर मुल्क में, भारत का अपमान ।
चाहिये तुम्हें शर्म खाना ॥
अगर कुछ दिनों तक, यही रहा तुम्हारा हाल ।
तो फिर हिन्दोस्तान का, बचना बड़ा मुहाल ॥
चाहते ग़ैर हड़प जाना ॥
क़ायम अपने ध्येय पर, अगर रहेंगे आप ।
सुख उपजेंगे मिटेंगे, सकल शोक सन्ताप ॥
यही सरयू का समझाना ॥ उठालो झंडा मरदाना ॥

आज़ादी का झगडा ।

राष्ट्रपति जवाहरलाल देशभक्त

भारत का डंका आलम म बजवाया वीर जवाहर ने ।
स्वाधीन बनो स्वाधीन बनो समझाया वीर जवाहर ने ॥
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का ।
सोते भारत को उठ करके जगवा दिया वीर जवाहर ने ॥१॥
दे दे इस्पीचें जिन्दा दिल, कमजोरी दूर भगादी सब ।
रग रग में खूँ आज़ादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने ॥२॥
हिन्दू व मुसलमां सिक्ख जैन, ईसाईपारसी भाई २ हैं ।
सब ऊंच नीच का वहम भेद, मिटवाया वीर जवाहर ने ॥३॥
एक रोशन आग दहकती है, आज़ादी की उसके दिल में ।
जिससे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवार ने ॥४॥
नवयुवक कड़ोरों भारत के, भूले थे भोग विलासों में ।
युवकों की शक्ती को एक दम, चमकाया वीर जवाहर ने ॥५॥
आदर्श चरित्र से वह अपने, युवकों का है सम्राट बना ।
आज़ादी का ऊंचा झंडा, लहराया वीर जवाहर ने ॥६॥
गांधी जब आशीश दे बोले, खुद क्लर्क बनूंगा मैं तेरा ।
तब सेहरा राष्ट्र पती का सिर, बंधवाया वीर जहाहर ने ॥७॥
लखकर 'प्रकाश' यह भारत का, अश्चर्य में डूबी है दुनिया ।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में, समझाया वीर जवाहर ने ॥८॥

ग़ज़ल ।

दीन भारत का करो कल्याण बन्दे मातरम् ।
कर दया दृष्टी हरो अज्ञान बन्दे मातरम् ॥
कीर्ति है निर्मल तेरी विख्यात सब संसार में ।
कर रहे हैं शेष तव गुणगान बन्दे मातरम् ॥
एक दिन तव पुत्र थे विख्यात अपनी आनमें ।
सह रहे हैं आज कल अपमान बन्दे मातरम् ॥
कर रहे हैं प्रेमयुत सब एक स्वर से प्रार्थना ।
भारतियों की निभा दो शान बन्दे मातरम् ॥
अब करो उद्धार माता वृद्ध भारतवर्ष का ।
हो सदा संसार में सन्तान बन्दे मातरम् ॥
निज चरण की भक्ति दे अरु आत्मबल की शक्ति दे ।
कर सकें तुझ पर निछावर जान बन्देमातरम् ॥
नाश होवे नास्तिकता अरु निरीश्वर बादिता ।
दीन द्विज सरयू धरे तव ध्यान बन्देमातरम् ॥

गाँधी ग़ज़ल ।

मादरे हिंद की है आंख का तारा गांधी ।
चर्ख़ पर क़ौम के पुर नूर सितारा गांधी ॥
हिन्द की वहतरी के वास्ते दर २ फिरकर ।
सख्तियां झेलीं बहुत कष्ट सहारा गांधी ॥
बच्चे २ का सर क़दमों में गिरा जाता है ।
जान हाज़िर है अगर करदें इशारा गांधी ॥

हर तरफ़ से यही आवाज़ चली आती है।
हम हैं गांधी के तरफ़दार हमारा गांधी ॥

राष्ट्रीय झण्डा।

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा ।
झंडा ऊंचा रहे हमारा। टेक ॥

सदाशक्ति बरसाने वाला, प्रेम सुधा सरसाने वाला।
वीरों को हर्षाने वाला, मातृ भूमि का तन मन सारा ॥ झंडा० ॥
स्वतंत्रता के भीषण रण में, लखकर जोश बढ़े क्षण क्षण में।
कांपे शत्रु देखकर मन में, मिट जावे भय संकट सारा ॥ झंडा० ॥
इस झंडे के नीचे निर्भय, लें स्वराज्य यह अविचल निश्चय ॥
बोलो भारत माता की जय, स्वतंत्रता है ध्येय हमारा ॥ झंडा० ॥
आवो प्यारे वीरो आवो, देश धर्म पर बलि बलि जावो।
एक बार सब मिलकर गावो, प्यारा भारत देश हमारा ॥ झंडा० ॥
इसकी शान न जाने पावे, चाहे जान भले ही जावे।
विश्व विजय करके दिखलावे, तब होवे प्रण पूर्ण हमारा ॥झंडा॥

स्त्रियों की प्रतिज्ञा।

देश आज़ाद करके दिखाएंगी हम।
झण्डा विजयी तिरङ्गा उठायेंगी हम ॥
देखलो सीता ने रावण के मुकाबिल में कहा।
बाहुबल से ही मैं तेरा गर्व सब दूंगी मिटा ॥
ऐसी शक्ति है हम में दिखायेंगी हम ॥ देश० ॥

दुश्मनों को जंग में दिखलायेंगी कुर्बानियां।
जिस तरह से वीरवर चित्तौड़ की क्षत्राणियां॥
रण में झण्डा तिरङ्गा उठायेंगी हम ॥ देश०॥
संगठन करके दिखादो वीर कहलाते अगर।
जान जाये शान पर धब्बा न आजाये मगर॥
यही बच्चों को पाठ पढ़ायेंगी हम ॥ देश०॥

गांधी टोपीवालों का जौहर !

इक लहर चला दी भारत में, इन गांधी टोपी वालों ने।
"स्वाधीन बनो" यह सिखा दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
सदियों की गुलामी में फंस कर, अपने को भी जो भूल-चुके।
कर दिया सचेत उन्हें अब तो, इन गांधी टोपी वालों ने॥
सर्वस्व देश-हित कर दो तुम, अर्पण सपूत हो माता के।
सर्बस्व-त्याग का मन्त्र दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
अनहित में भारत-माता के, जो लगे देश-द्रोही बन कर।
उनको सत पथ पर चला दिया, इन गांधी टोपी वालों ने॥
पट बन्द हुये कितने मिल के, लंकाशायर भी चीख उठा।
चरखे का चक्र चलाना जब सिखलाया गांधी टोपी वालों ने॥

ग़ज़ल।

किसी को जहां में बनायेगा खद्दर।
किसी को जहां से मिटायेगा खद्दर॥
तरक्क़ी पै जब अपनी आयेगा खद्दर।
तो हर सिम्त जल्वा दिखायेगा खद्दर॥
अदायें कुछ ऐसी दिखायेगा खद्दर।
हसीनों के दिल को लुभायेगा खद्दर॥

हुकूमत ने वे वालों पर कर दिया है।
मगर अब तो हमको उठायेगा खद्दर ॥
बिदेशी को छोड़ो स्वदेशी को पहनो ।
गुलामी से, तुमको छुड़ाएगा खद्दर ॥
पुकारेंगे जब हम प्यारा जवाहर ।
यह गांधी का डंका बजाएगा खद्दर ॥
बहम हिन्दू मुसलिम की रस्सैंबढ़ेंगी ।
यह दोनों को एक कर दिखाएगा खद्दर ॥
रहै डीवन का लट्ठा नहीं नैनसुख है ।
यह मलमल के पुरज़े उड़ाएगा खद्दर ।
बनेगी कभी इसकी एक रोज़ कफनी ।
जगह फ़रके आलम पै पाएगा खद्दर ॥
न डर (नाजा) खद्दर पहनने से हरगिज़ ।
बला बनके तुमको न खायेगा खद्दर ॥

वार्ता—भारत माता का सन्देश महात्मा गान्धी द्वारा अपने ३२ करोड़ हिन्दू मुसलमान व अन्य भारतीय जातियों को—

ग़ज़ल।

मेरे पुत्रों को यह पैग़ाम दे देना ज़रा बेटा ।
मर मिटो देश की खातिर मेरे लख्ते जिगर बेटा ॥
जना करती हैं जिस दिन के लिये औलाद मातायें ।
मेरे शेरों से कह देना कि वह दिन आ गया बेटा ॥
जहां में बुज़दिलों की भांति रोने गिड़गिड़ाने में ।
किसी का हक़ मिला भी है बताओ तो भला बेटा ॥
सुना है सिंहनी एक शेर जनकर सुख से सोती है ।
करोड़ ३२ के होते हुए दुख पा रही बेटा ॥

तुम्हारी शक्ल देखूंगी न हर्गिज़ दूध बख़्शूंगी ।
निकालोगे न तुम यहां से विदेशी वस्तु को बेटा ॥
रामसिंह जिस्म खाकी ख़ाक में मिलता है मिलने दो ।
करो मत मौत का खटका अमर है आत्मा बेटा ॥

दादरा ।

वार्त्ता—एक सौभाग्यवती स्त्री की अपने पति से प्रार्थना—

मत लाना चुन्दरिया हमार विदेशी हो बालमा ॥

शैर—है हुक्म गांधी का चर्ख़ा चलाइये ।
बुनने के लिये मेरे करघा भी लाइये ॥
करूं देशी पै तन मन निसार ॥ वि० १ ॥
तनज़ेब व मलमल को हर्गिज़ न लाइये ।
मख़मल व डोरिये में अग्नि लगाइये ॥
लंका शायर के खावें पछार ॥ वि० २ ॥
कुर्त्ता फतुई मिर्ज़ाई देशी बनाइये ।
बच्चों को कोट पैन्ट न हर्गिज मंगाइये ॥
बचें रोज़ाना सत्तर हज़ार ॥ वि० ३ ॥
ज़ेवर मेरा कर दीजिये गांधी के हवाले ।
जिससे कि वीर हिन्द की इज़्ज़त को बचाले ॥
(इन्द्र वर्मा) की है यह पुकार ॥ वि० ४ ॥

माता की पुकार ।

ऐ हिन्द के सपूतो ! कुछ भी तो कर दिखाओ ।
अब भी तजो गुलामी सबको यही सिखाओ ॥
सुनकर हजारों लेक्चर आगे कदम बढ़ाओ ।
कस ही चुके कमर तो फिर पीठ मत दिखाओ ॥
सिर फूट भी चुका हो खाकर पुलिस के डंडे ।
जब होश फिर से आवे झंडे का गीत गाओ ॥
आजाद है जो होना पहला सबक यही है ।
कानून को कुचलकर घर जेल को बनाओ ॥
नक्शा तुम्हें बनाया अंग्रेज ने दगा से ।
बारी तुम्हारी आई उनको जरा नचाओ ॥
वह साइमन कमीशन, यह जांच, वह कमेटी ।
सब हैं फरेब, इनसे फिर भी दगा न खाओ ॥
आँखें जो खुल चुकी हों, तुम जाग जो चुके हो ।
तब आँख मूद कर, बस, गाँधी की जय मनाओ ॥
खादी पहन रहे हो बे खौफ बन रहे हो ।
हिंसा का दाग काला उस पर न तुम लगाओ ॥
जो जुल्म कर रहे हैं होकर तुम्हारे भाई ।
पिस्तोल देशी उन पर बायकाट की चलाओ ॥
कट जाय सर, न कर दो, यह आखरी कसौटी ।
इसका भी वक्त आया, वीरों ! कदम बढ़ाओ ॥

॥ इति समाप्त ॥

नई प्रकाशिक पुस्तकें ।

सूत्र शिलप शिक्षा सचित्र स्त्रीयों को सुई डोरे का काम सिखाने वाली पुस्तक का मूल्य १) स्त्री धर्म बोधनी ।=) वालमीक रामायण अर्थात रामचरित्र चिन्तामणि २॥) धर्मवीर हक़ीक़तराय ॥=) वीर शिवाजी ।=) मंगला मुखी अर्थात् संस्कार नवीन गीतसंग्रह ।=) रमणी रतनसागर ।=) ऐतिहासिक गीताञ्जली ।) वीरगायन ≡) स्त्रीसुधार =)॥ भजन संकीर्तन –)॥ आदर्श महिला ।) संध्या हवन विधि –) महिला सुन्दरी –) सीता सतवन्ती –) महारानी तारामती –) संसार का आगामी धर्म –) धर्मशिक्षा =)

नये २ प्रकाशक ट्रैक्ट ।

महात्मा गांधी का चक्र –)॥ भारत माता के भक्त –)॥ स्वतन्त्रता की देवी –)॥ स्वराज्य की लहर)॥ वीरों के बलिदान)॥ स्वाज्य का डंका)॥ राष्ट्रीय शंखनाद –)॥ झांसी की रानी –)॥ शराब का बायकाट)॥ वेदों का डंका)॥ शुद्धी का झंडा)॥ सावन बहार)॥ पतिपतनी का प्रेम)। शारदाचिल)॥ मर्दाने का जलवा)॥ शुद्ध संगठन)॥ फैशन की हेडमास्टरना)॥ मन मोहनी)॥ चटपटा मसाला)॥ दलित उद्धार ।) वीर क्षत्राणी)॥ होली की बहार)॥ रंगीली होली)॥ वाले मियां की पूजा)॥

छोटी साइज़ के ट्रैक्ट ।

बाल प्रश्नोत्तरी)॥ कन्या प्रश्नोत्तरी)॥ भजन रामायण)॥ ईश्वर प्रार्थना)॥ मंगला मुखी छोटी)॥ छत्रपति शिवाजी)॥ वैदिक संध्या)॥ हवन मंत्र)॥ वैदिक रसिया) ॥

व्यापारी दुकान्दारों को उचित कमीशन काट कर माल भेजा जाता है शीघ्र आर्डर देकर लाभ उठायें ।

पुस्तकें मिलने का पता—राष्ट्रीय विद्यालय रामपुर ।

ज्वालाप्रसाद वर्मा बुकसेलर आगरा ।